प्रेम वाहिनी

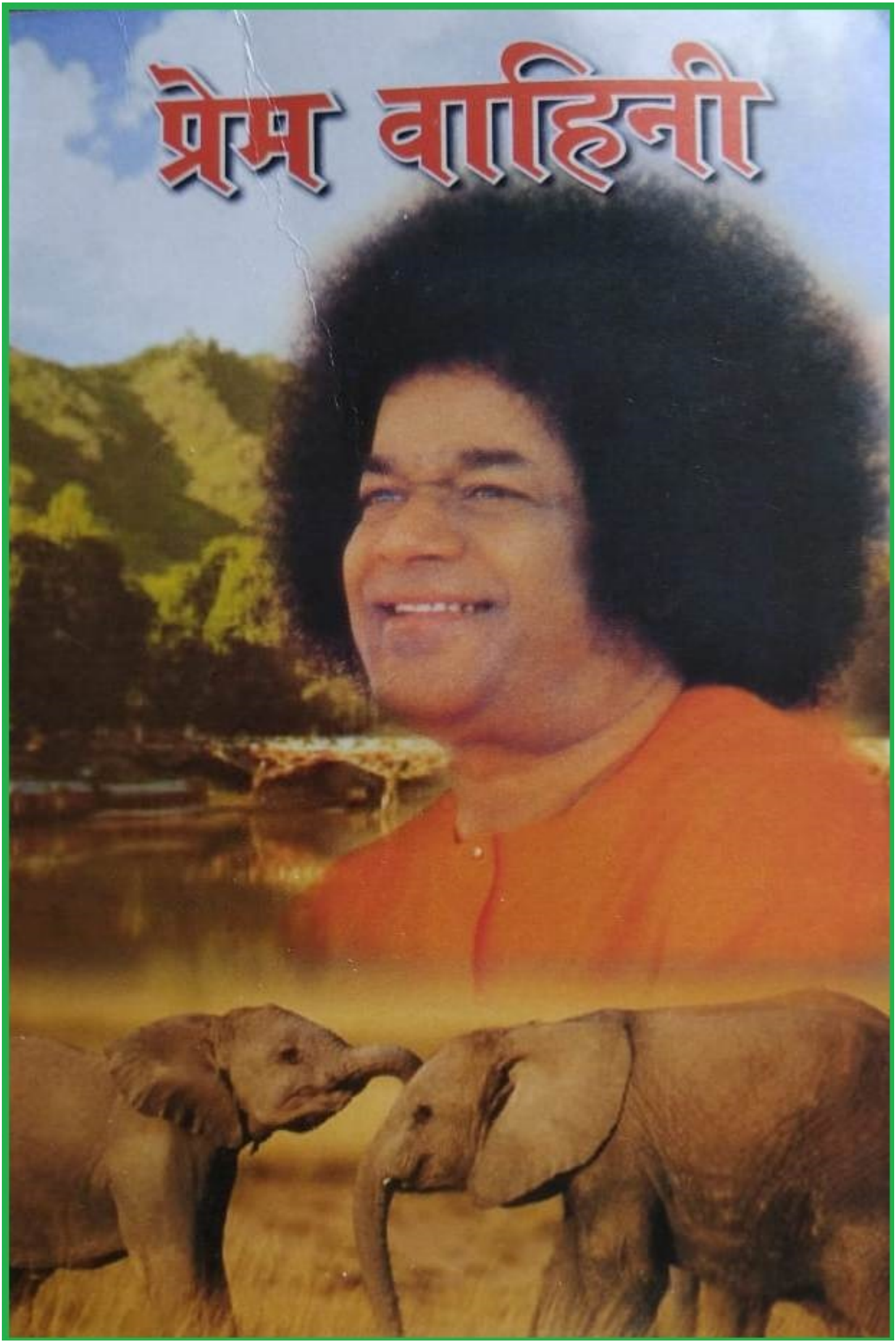

२२

आज के शब्द, बीते कल के कार्य हैं

त्रेता युग में जब नारद ने श्री रामचन्द्र जी से उनके दासों और आध्यात्मिक साधकों की प्रकृति और चारित्रिक विशेषताओं के सम्बन्ध में प्रश्न किया तो उन्होंने निम्नांकित उत्तर दिया:—

"हे नारद ! सुनो जो मेरे दास होते हैं वे प्रेम से पूर्ण होते हैं; वे सदा धर्म की मर्यादा का पालन करने वाले, सत्यवादी होते हैं, उनके हृदय करुणा से द्रवित होने वाले होते हैं, वे अन्याय से रहित होते हैं और पाप से बचते रहते है। उनकी प्रकृति सुदृढ़ होती है, वे सर्वस्व त्याग प्रसन्नतापूर्वक कर सकते हैं, वे मितभोगी होते हैं। वे परोपकार में निस्वार्थ भाव से संलग्न रहते हैं, वे संशयों से ग्रस्त और चिन्तित नहीं होते हैं। वे चाटुकारिताप्रिय नहीं होते हैं। वे दूसरों के सत्स्वभाव की प्रशंसा सुनने को सदा उत्सुक रहते हैं। उनका चरित्र सुन्दर, दृढ़ और पवित्र होता है। साधक वे ही होते है जो ऐसे सद्गुण प्राप्त करने की सदा चेष्टा करते हैं और जिनका चरित्र ऐसा होता है। अब मैं तुम्हें उन लोगों के विषय में बतलाऊँगा जो मुझे प्रिय हैं। जो कोई भी जप, तप और व्रतों में लगा रहता है; जिसमें संयम नियम होते हैं, जिसमें निष्ठा, धैर्य, दयालुता, आनन्द और सहधर्मी होने की भावना तथा मेरे प्रति शुद्ध प्रेम भाव होता है, वह मेरा प्रिय है।

अब मेरे वास्तविक भक्तों के विषय में सुनो। जो कोई विवेक, वैराग्य, विनय और विज्ञान के साथ उस वास्तविक तत्व को जानते हैं जो सदा मेरी लीला के स्मरण में मग्न रहते है, जो सदा मेरे नाम स्मरण में लगे रहते हैं चाहे जैसी परिस्थितियाँ क्यों न हों; जिनका किसी से भी मेरा नाम सुनकर प्रेमातिरेक से अश्रुपात होने लगता है, वे ही मेरे वास्तविक भक्त हैं।

इन शब्दों में श्रीराम ने नारद को उत्तर दिया। इसलिए जो पवित्र भक्ति भाव से भगवान् की आराधना और चिंतन करते हैं, उनकी भगवान् सब प्रकार

से उसी प्रकार सदा रक्षा करते हैं जैसे माँ अपने शिशु की; गाय बछड़े की संकट में रक्षा करती है और पलक आँखो की स्वतः बिना किसी इच्छित प्रयास के रक्षा करते हैं। जब शिशु बड़ा होकर तरुण होता है तो फिर माँ उसकी सुरक्षा की उतनी चिंता नहीं करती है। इसी प्रकार भगवान् भी ज्ञानी की ओर बहुत ध्यान नहीं देते हैं। सगुण भक्त भगवान् के लिए शिशु के समान होता है। इसलिए भगवान् की शक्ति के अतिरिक्त उसके पास कोई शक्ति नहीं होती है। ज्ञानी को अपनी शक्ति ही पर्याप्त होती है। व्यक्ति को भगवान् के हाथों में सगुण भक्त की तरह शिशु रूप में रहना चाहिए, है न ऐसा ही? पहले सगुण भक्त रहे बिना कोई भगवान् का निर्गुण भक्त नहीं हो पाता है। इसलिए भक्तों को माँ की गोद में शिशु की भाँति विकसित होना चाहिए। इसलिए ज्ञानी बनो जो अपनी शक्ति पर निर्भर रह सकता है और स्वतन्त्र हो जाता है। फिर भी दोनों की भक्ति का स्रोत एक ही है, मां! जो भक्ति पथ के इस रहस्य को समझ जाते हैं वे ही वास्तव में भाग्यशाली हैं, जो एकाग्र भक्ति का विकास कर लेते हैं और अपने चरित्र की विशिष्टताओं को सरल बना लेते हैं, जो भगवान् की गोद में अपने आपको शिशु रूप में बदल लेते हैं और जो अपने द्वारा कृत हर कार्य को भगवत् इच्छानुसार हुआ मानता है।

इसलिए जो भगवान् के दास, भक्तप्रिय और अनन्य भक्त होने के आकांक्षी रहते हैं, उनको तदनुकूल मार्ग पर चल देना चाहिए, नाम लें, कार्य करें और उसी के अनुसार जीवन-यापन करें। भक्त को भक्ति के उपर्युक्त गुणों को अपने में विकसित करना चाहिए, प्रिय को भगवान् के प्रेम का अनुसरण करना चाहिए। अनन्य भक्त को पूर्णरूपेण प्रभु के प्रति समर्षित हो जाना चाहिए। केवल अध्ययन और जिह्वा संचालन से पूरा नहीं पड़ता है। आनन्द तो क्रिया का परिणाम होता है। यह आनन्द जाति या सम्प्रदाय अथवा लिंग पर नहीं निर्भर करता है। उन दिनों में भी, जब श्रीराम शबरी के यहां गए तो उसने जबकि वे उसके द्वारा प्रत्येक चखकर संकलित, सुरक्षित कन्दमूल फलों का भोजन पा रहे थे, इस प्रकार पूछा, "भगवान्! मैं तो स्त्री हूँ मन्द बुद्धि वाली हूँ, इस पर मैं नीच कुल में उत्पन्न हुई हूँ, मैं आपकी पूजा और भक्ति का

कुछ भी विधि-विधान नहीं जानती हूँ; मैं आपकी स्तुति किस प्रकार करूँ?" तब श्रीराम मुस्कराए और उन्होंने उत्तर दिया, "शबरी! मैं तो केवल भक्ति का नाता ही मानता हूँ, यही मेरा उद्देश्य है। मुझे जाति सम्प्रदाय से कोई सरोकार नही हैं। भक्ति से शून्य होकर सामाजिक उच्चस्तर, धन और चरित्र का क्या मूल्य रह जाता है? वर्षा-जल से रहित बादल के टुकड़े की तरह जो आशा में इधर-उधर मंडराता फिरता है, भक्ति से रहित ये लोग भी, चाहे जिस उच्च स्थिति, धन, जाति और शक्तिशाली, ख्याति प्राप्त हों, वायु की दिशाानुसार भ्रमित रहते हैं। भक्त मुझे नवधाभक्ति के द्वारा प्राप्त करता है। उनमें से प्रत्येक के द्वारा वह मुझको ही प्राप्त होता है।" तब शबरी ने ९ प्रकार की भक्ति की व्याख्या करने की प्रार्थना की और श्रीराम ने उत्तर दिया:—

"श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणम् पाद सेवनम्। वंदनं, अर्चनं, दास्यम् स्नेहनात्मनिवेदनम्।।"

इन ९ में से किसी विधि से भी यदि भक्त सच्चे मन से साधना करता है तो वह मुझे प्राप्त कर सकता है। भक्ति के इन ९ प्रकारों से मैं एक प्रकार से बंधा हुआ हूँ। यही कारण है कि तुम्हें इतनी सरलता से मुझे स्पर्श करने, बात करने, देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ है और ऐसा अवसर तो योगियों को भी बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है। आज तुम्हारा जीवन सफल हो गया है। देखो ! आज के शब्द केवल बीते हुए कल के कार्य हैं।